P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

रामनवकीरति प्रकाश में वर्णित जयपुर

कविता पालावत
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
महारानी गर्ल्स पी0 जी0
कालेज, कनवाड़ा

सारांश

शताब्दियों से परिष्कृत हुआ चारण साहित्य राजस्थानी इतिहास की आत्मा है। इस साहित्य ने अपने में इतिहास संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं को संजोकर उसमें सजीवता लाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

चारण साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये ऐतिहासिक हैं। यही ऐतिहासिक पक्ष इसे सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट बनाता है। ये साहित्य ऐतिहासिक व सामाजिक जानकारी का बड़ा महत्वपूर्ण स्त्रोत है क्योंकि चारणों ने क्षत्रियों का संकट के समय में युद्ध क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिला कर साथ दिया। युद्ध क्षेत्र में स्वयं उपस्थित होने के कारण यह साहित्य उन सभी तथ्यों–बातों का वर्णन करता है जो समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में घुट गई है। इसी श्रेणी का ऐतिहासिक ग्रन्थ है–रामनवकीरति प्रकाश ग्रन्थ।

मुख्य शब्द : सतखणा – सातभाग, दरियाव – तालाब, रसोवडा – ससोई, जीम्हण – खाना, तरकारिया – सब्जियाँ, अमल – अफिम, खांप – गौत्र, राड़ – लड़ाई

प्रस्तावना

हरमाड़ा के रामदयाल गाडण द्वारारचित यह एक वृहद ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ विविधताओं से भरा पड़ा है। जिससे हमें चारणों के ज्ञान भण्डार का पूरा परिचय प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ को रामदयाल गाडण ने महाराजा रामसिंह द्वितीय की आज्ञा से वि.सं. 1918 में लिखना प्रारम्भ किया परन्तु यह खेद का विषय है। जयपुर राज्य के विषय में रचित यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ अज्ञानता व राजस्थानी साहित्य की अनदेखी के कारण, समय के गर्त में कहीं विलुप्त हो चुका था। परन्तु काव्य साधक श्री बद्रीदान गाडण के प्रयासों से इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति को हम खोज पाने में सफल हुये।

इस ग्रन्थ को कवि ने नौ प्रकरणों में विभक्त किया है। इस ग्रन्थ के सभी विषय परम्परागत है क्योंकि वह युग ही परम्पराओं का था। इस ग्रन्थ की रचना करते समय कवि ने तत्कालीन काव्यों की रुढ़ियों परम्पराओं का पूरा पालन किया है। कवि ने अपना ग्रन्थ प्रारम्भ किया है।

राजलोक

यह ग्रन्थ का प्रथम शीर्षक है। इस प्रकरण में रामदयाल ने राजनिवास स्थान यानी जयपुर राज्य के महलों का वर्णन किया है। निसाणी का वर्णन, महलों का वर्णन सतखणा वर्णन, चन्द्रमहल का वर्णन, तीर महल का वर्णन, बागों का वर्णन, फुहारों का वर्णन तथा मकानों का वर्णन दरियाव वर्णन। इन बागों में लोगों द्वारा आराम करने का वर्णन, गोविन्द देवजी के मन्दिर का वर्णन, राजाओं की स्तुति का वर्णन, शिवजी की झांकी का वर्णन, हाथियों की लड़ाइयों का वर्णन, वाणी वर्णन, घोड़ों का वर्णन बहल्य वर्णन, बग्गी वर्णन किया गया है। कवि ने इन स्थलों का राजमहल के अन्दर महलों रानियों के रहने का उनके मनोरंजन दिनचर्या पूजा–पाठ मन्दिरों का बागों का वर्णन इस प्रकार कि वहाँ उपस्थिति की अनुभूति होती है। कवि ने यह वर्णन तीन साटिका चार दूहा 374 नीसाणी छन्दों में किया है। इस प्रकरण की एक अन्य विशेष्ज्ञता यह है कि कवि का समय 18वीं शताब्दी है। इस कारण कवि 1857 की क्रान्ति का प्रत्यक्षदर्शी है। उसने स्वयं अपने नेत्रों से क्रान्ति की उस आँधी को देखा था जिसमें तत्कालीन भारत ढ़क गया था। इस ग्रन्थ में कवि ने जयपुर के शासकों द्वारा क्रान्ति में भाग न लेने के कारण उनकी निन्दा की है।

सहचराकमाला

यह ग्रन्थ का द्वितीय प्रकरण है। इस प्रकरण में कवि ने जयपुर नगर के दर्शनीय स्थलों का वर्णन किया है। इसे जयपुर का गाइड कह सकते हैं। कवि ने जयपुर के दर्शनीय स्थलों का वर्णन ऐतिहासिक संदर्भ में किया है। कवि ने उन स्थलों का वर्णन किया है। जिनका निर्माण ऐतिहासिक घटना के उपलक्ष में हुआ है या जहाँ ऐतिहासिक घटना घटी इनमें नीसाणी, पुर फलसा वर्णन,

आमेर का वर्णन घाटों का वर्णन, झालाणा, सांगानेर का वर्णन, तोपखाने का वर्णन, जयगढ़, नाहरगढ़ का वर्णन हवामहल कावर्णन भूपराम रचित महल वर्णन।

छतिस खांप वर्णन

यह तृतीय प्रकरण है। इसमें कछवाहों की खांपों के विषय में बड़ी ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। तथा कछवाहों का क्रमगत वर्णन मिलता है। तथा महाराज पृथ्वीसिंह के 12 पुत्रों का वर्णन तथा इनमें विभाजित 12 कोटडियों का वर्णन है। इसमें कई ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है। जो कछवाहों का इतिहास लिखने में सहायक है।

मलाद राड झाल झलामल

इस प्रकरण के अन्तर्गत उन साहसिक प्रदर्शनों का वर्णन है जो तत्कालीन समय के मनोरंजन का साधन था, जिससे राजा, सामंत अपना मनोरंजन करते थे। इसमें मल्लयुद्ध, तीतर की लड़ाई, चीतलों की लड़ाई, हिरण का युद्ध, हाथियों की लड़ाई, पोलो घुड़दौड़ का वर्णन किया गया है।

सभी नछग चंद शीर्षक

इस प्रकरण में कवि के साहित्यक व व्याकरण के ज्ञान का परिचय मिलता है। इसमें कवि ने हिलोल, फूलमाल, गणबत आदि काव्य कला के गूढ़ ज्ञान को परिलक्षित करने वाला ही कवि को आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

बारहमास बाडहादीत

प्रस्तुत प्रकरण में बाहरमासों का वर्णन है। इस प्रकरण के रोचक विषय हैं। तरकारियों पुलावों आदि बनाने की क्रिया। विभिन्न ऋतुओं के भोग दारु, अमल और मार्ग के रंग भी इस प्रकरण में है।

पंच पीढ़ी जुध पंचानल

यह ग्रन्थ का सप्तम प्रकरण है प्रस्तुत प्रकरण में कवि ने आमेर–जयपुर की पाँच पीढ़ियों के युद्धों का वर्णन किया है। इसमें सवाई जयसिंह के समय में लड़ा गया खीरोड़ जयपुर–जोधपुर युद्ध, महादजी सिन्धिया से लड़ा गया युद्ध, फतेहपुर का युद्ध और मल्हार राव होल्कर के साथ माधोसिंह प्रथम के काल का युद्ध तथा कवि ने सवाई जयसिंह के सांभर युद्ध का वर्णन किया है। यह प्रकरण जयपुर का इतिहास की जानकारी के लिये बड़ा सहायक है।

वीररस सर्बतेजोध जुध

इस प्रकरण में कवि ने वीर रस के 538 दोहे सोरठे रचे जिनमें वीरों के मनों भावों के साथ–साथ कायरों की मनोदशा का सम्यक चित्रण किया है। तथा 1857 के सेनानियों के विषय तथा अन्य में वीरतापूर्ण कृत्यों की प्रशंसा की गई है तथा कायर लक्षण वर्णन 'सुकव वर्णन' किया गया है।

रसिदु डंगल मारतड

इसमें विपरीत वर्णन किया गया है जिसमें कवित्त, छप्पय गीत, सोरठा, लिखे गये हैं।

शोध का उद्देश्य

चारण साहित्य में ऐतिहासिक सामग्री छायी पड़ी है। युद्ध विषयक ग्रन्थों में युद्ध की घटनाओं के साथ–साथ तत्कालीन राजा और प्रजा का सम्बन्ध सामाजिक और आर्थिक इतिहास भी मिलता है। चारण साहित्य में छिपी ऐतिहासिक सामग्री उससे जुड़े दान–सम्मान विषय दस्तावेज और साहित्य का सांस्कृतिक मूल्य है। भारतवर्ष के इतिहासकार उसके दस्तावेजों मूलय को समझ कर इतिहास लेखन में इसका विनियोग करे तो यह बात पूर्णतः प्रमाणित हो जायेगी कि चारण साहित्य में इतिहास लेखन की प्रणाली कितनी समृद्ध थी।

निष्कर्ष

इस प्रकार रामनवकीरति प्रकाश जयपुर के विषय में पर्याप्त ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ महाराजा रामसिंह द्वितीय की आज्ञा से वि.सं. 1918 में लिखना प्रारम्भ किया गया कवि रामदयाल गाडण द्वारा जिसके कारण कवि का वर्णन विश्वसनीय प्रकट होता है क्योंकि कवि इन सब घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है। वह राज, सामंत जयपुर नगर, आदि का वर्णन प्रत्यक्ष अनुभव के साथ करता है तथा कवि ने प्रस्तुत ग्रन्थ में कवि ने जीवन के हर क्षेत्र, खान–पान, वेश–भूषा, वंश–क्रम, मनोरंजन तथा चारणों के प्रिय विषय वीरता का वर्णन पूरे मनोयोग तथा विश्वसनीयता व तथ्यों के साथ किया है। यह ग्रन्थ जयपुर के इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण सामग्री है। इस पर विस्तृत अनुसंधान की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रामदयाल गाडण, रामनवकीरति प्रकाश (हस्तलिखित), पृ.2.*
2. *वही, पृ.5 से 14.*
3. *वही, पृ.15 से 20.*
4. *रामदयाल गाडण्या, रामनवकीरति प्रकाश, 20 से 26.*
5. *वहीं, पृ. 27 से 74.*
6. *वहीं, पृ. 74 से 85. (हस्तलिखित)*
7. *रामदयाल गाडण, रामनवकीरति प्रकाश, पृ. 85 से 99.*
8. *वही, पृ.204 से 226.*